मेरा यार ऐसा तो न था

विचार हुआ चले मित्र से मिलने
आज तो थें अब कई चहरे खिलने
अपने रिश्ते में रमी ही मिठाई
     सोचा ले चलूँ कोई ऐसी जो उसे भाई
हाथ में मिठाई की पन्नी लटकाकर
     और अपनी भावनाओं का भँवर पारकर,
मैं उसकी गली में पहुँच गया,
पर गृह के आने पर द्वारपाल ने रोक दिया,
और मेरी सारी इच्छाओं को टोक दिया,
चलने, बोलने, हँसने, बुलाने और श्वास लेने पर,
बोला, यहाँ सब पर लगेगा कर,
और कर की कसौटी बतलाएगी,
     तुम्हारी मिलाक़ात का स्तर,
मेरा यार वहाँ मुस्काता खिड़की से था झाँक रहा,
मेरा यार ऐसा तो न था !

फिर कुछ व्यक्तियों ने मुझे घेर लिया,
मेरे एकाग्र को फिर एक बार छेड़ गिया,
और मित्र के सम्बंधी के अधिकार से मिझे बताया,
कि स्थिति, स्वास्थ्य ने हैं उन्हे सताया,
पर मैंने यह असत्य प्रत्यक्ष ही पाया,
बोले, हमारी करो धन से मदद
करले अपने मित्र को गदगद,

पर ! उनके मुँह, वस्त्र और काया,
पर मेरा मित्र ही तो था छाया,
मेरा यार वहीं मूक बैठा सारा असत्य था भाँप रहा,
मेरा यार ऐसा तो न था ।

किसी प्रकार मैं गृह के अन्दर समाया,
तो स्वयं को मिलने वालों की कतार में पाया,
माना मेरा यार सुप्रसिद्ध व्यक्ति था,
पर मैंने तो यहाँ धन को धीरज से धन्य पाया,
मेरे दो लड्डू की छोटी सी पन्नी
स्वयं-स्थापित सेवक ने बनाइ सूरत अनबनी,
मैं अपनी बिखरी श्रद्धा की बूंदियों को चुगता, सजल नेत्रों से
तुझे निहारता ।
मेरा यार ऐसा तो न था ।

तेरे से साक्षात्कार भी अब हो गया
मन की दशा ऐसी, कि दो बातों का अवसर भी मैं खो गया,
तेरे सेवकों का सत्कार भी सराहनीय
मेरे ही दो लड्डू, रख दिये मेरे सामने,
तेरा जो मित्र जितनी 'भौतिक आत्मीयता' लाया था,
उसने उतना ही आदर-सत्कार पाया था,
नाश्ते की ऐसी मेज पर, तुझसे दो बातें प्यार की न कर सका,
मेरा यार ऐसा तो न था . . .

तेरे घर से निकला, मन कुछ खिंचा-खिंचा
एकाग्र था भंग, मन जो तुझपे केंद्रित . . .
पा रहा अब सामाजिक दिशा,
अरे ! फिर तेरी कुछ आवाज़ आई,
तेरे घर से नहीं, हाँ ! 'तेरे घर' से आई,
आत्मा से तेरे स्वर कुछ यू फूट रहे थे अविरल . . .
जो कतार में सबसे दूर, है मेरा निकटतम सम्बंधी,
तेरे लड्डुओं को नहीं, उनकी अंदर की भावनाओं को भाँप,
     बन जाता हूँ उनका मैं तुरंत बंदी,
वार्ता तो केवल तेरे आभास से कर लेता हूँ,
     छवि तेरी-मेरी समाए एक-दूसरे के मन में,
सेवक तो उनके लिये, जो करने आते हैं व्यापार,
     तुम तो हो 'ईश्वर के बंदे,'
कतार में पीछे ही रहना, एकाग्र रहना, लाना केवल श्रद्धा,
     देखो दो मित्रों का फिर कैसा जमता है मस्त समा !!

पा गया मैं अपना यार पुराना,
     मेरा यार तो ऐसा ही था ॥

वरुण
2005

"In search of God in temples"

Many thanks to Punya who made an e-copy of this poem when he organized a literary event at MIT in 2007.